ISSN : 2347-9116

उर्दू-उपन्यासों में 'भारतीय संस्कृति'

इशरत बी. खान

भारत विभिन्न धर्मों, विभिन्न मतों और विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल रहा है। इतनी विभिन्नता के होने पर भी यहां एक ऐसी एकता पाई जाती है जो सारे देश को एकसूत्र में बाँधे हुए है। यदि हम अपने इतिहास पर एक नजर डालें तो जो भी विदेशी यहाँ आया वह भारतीय संस्कृति में रचबस गया। भारत में मुस्लिम साम्राज्य के स्थापित होने के साथ ही हिन्दू-मुसलमानों में सांस्कृतिक और साहित्यिक आदान प्रदान होने लगा। मुग़ल शासकों और कवियों ने भारतीय धार्म, दर्शन एवं साहित्य का गहराई से अध्ययन किया। इस संबंध में रामधारी सिंह 'दिनकर' लिखते हैं, ''दाराशिकोह हिन्दुत्व और हिन्दी साहित्य दोनों का अगाध प्रेमी था। कहते हैं, उसकी अँगूठी पर नागरी अक्षरों में 'प्रभु' शब्द अंकित रहता था''[1]

उर्दू भाषा में काव्य के साथ ही साथ तेजी से अनेक गद्य विधाओं का विकास हुआ लेकिन खासतौर से उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं जीवन की जो झांकी प्रस्तुत की गई है, वह बेमिसाल है।

भारतीय अध्यात्म एवं दर्शन, उदारता-साहिष्णुता, हिन्दू-मुस्लिम एकता, नारी की महत्ता, लोक संस्कृति (पर्व, त्यौहार, उत्सव, भाषा), भारतीय मिथक आदि भारतीय संस्कृति के विभिनन तत्त्वों को उर्दू उपन्यासों में सफलतापूर्वक उभारा गया है।

भारतीय संस्कृति में अध्यात्म का विशेष महत्त्व है। भारतीय अध्यात्मवाद के विषय में डॉ. राधाकृष्णन का कहना है, ''मानव की तार्किक प्रवृत्ति से अधिक ज़ोर आध्यात्मिक प्रवृत्ति पर दिया गया है।''[2] जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति करना है। इसके भक्ति, ज्ञान, तप चिन्तन आदि विविध साधन बताए गए हैं। 'आग का दरिया' उपन्यास अपने समय से तो साक्षात्कार कराता ही है इसके साथ ही भारतीय संस्कृति की 'अध्यात्म एवं दर्शन' से भी परिचित कराता है। कुर्रतुल ने इस उपन्यास में अध्यात्म-दर्शन के विभिन्न पक्षों पर व्यापक रूप से विचार किया है। 'शरीर की नश्वरता' के संबंध में कुर्रतुल लिखती हैं-

''शरीर और आत्मा दोनों नश्वर है। दोनों के इकट्ठा होने से भी कोई शाश्वत अस्तित्व जन्म नहीं लेता। आत्मा शाश्वत नहीं है। मनुष्य दीपक की तरह बुझ जाता है। केवल घटनाओं और भावों का क्रम शेष रहता है।''[3]

अध्यात्म के साथ ही भारतीय दर्शन का अनुशीलन बड़ी गम्भीरता से किया गया है। दर्शन को सबसे ऊँची विधा कहा गया है। दर्शन ही किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति को गौरवन्वित

• प्रोफेसर अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

करता है। इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि सूफी दर्शक का आधार भारतीय दर्शन ही है। भारतीय दर्शन संबंधी सभी धारणाओं को 'आग का दरिया' उपन्यास में समाविष्ट किया गया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण द्रष्टव्य है-''परमात्मा और जीवात्मा में अविधा के कारण द्वैत्व है। इसीलिए शब्द और अशब्द दो अलग-अलग ब्रहम है, शब्द को ध्यान करके ही अशब्द को प्रकट किया जा सकता है।''[4]

उदारता, सहिष्णुता और सहनशीलता भारतीय संस्कृति की दूसरी विशेषता है। अपनी इसी विशेषता के फलस्वरूप, भारतीय संस्कृति अब तक सजीव बनी हुई है। काजी अब्दुल सत्तार के नाविल 'पहला और आखिरी ख़त' में इन्सान का इन्सान के प्रति प्रेम तथा धार्मिक सहिष्णुता देखते ही बनती है.... ठकुराइन ने उन्हें (चौधरी) गले लगा लिया और देर तक खड़ी रही फिर बोली-

''चौधरी भगवान के लिए अभी न जाओ। मोरा जी हिल रहा। ठकुराइन के लहज़े में ममता की मिठास थी।''[5]

इलियास गद्दी के उपन्यास 'फायर एरिया' में हिन्दू-मुस्लिम एकता व प्रेम का सुन्दी अंकन किया गया है। इसी उपन्यास से धार्मिक सहिष्णुता का एक उदाहरण देखिए- वापस में सायकिल चलाते हुए सहदेव सोचता रहा..... ''यह दुआ किसने किसको दी है? एक बाप ने एक बेटे को, या एक मुसलमान ने एक हिन्दू को? मजूमदार कहता है कि ऐसी सीमा है जहां धर्म अपनी पहचान खो देता है, हर प्रकार का भेदभाव मिट जाता है, खुद की बनाई हुई सारी दीवारें टूट जाती है, खुद की खींची हुई सारी लकीरें मिट जाती हैं।''[6]

भारतीय संस्कृति में नारियों का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय नारी के विभिन्न पहलुओं पर कुर्रतुल के उपन्यास 'आग का दरिया' में विचार किया गया है। यही कारण है कि 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता', बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय, सर्वे भवन्तु सुखिनः- सर्वे सन्तु निरामयः वसुधैव कुटुम्बकम् तथा परोपकार परमो धर्माः आदि उक्तियाँ भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र एवं मूलाधार हैं।

भारतीय संस्कृति का प्राण तत्त्व लोक-संस्कृति है। इसी में सम्पूर्ण भारत की छवि उभरती है। इसके अन्तर्गत, संस्कार, पर्वात्सव, विभिन्न ऋतुएँ, विभिन्न प्रकार के मनोरंजन, व्यवसाय, लोकगीत, लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे आदि आते हैं।

उर्दू उपन्यासकारों ने भारतीय संस्कृति को समग्रता में उभारा है। इसके लिए उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों के तीज-त्यौहारों को एक साथ देखा है, चित्रण किया है। भारत में होली, दीवाली, ईद, दशहरा, रक्षाबंधन राष्ट्रीय त्यौहारों के रूप में मनाएँ जाने लगे। इन त्यौहारों को सभी धर्मों के लोग मिलजुलकर धूमधाम से मानते थे। इससे विभिन्न धर्मों के लोगों को एक दूसरे के करीब आने और समझने का मौक़ा मिलता था। इस अवसर पर मानवीयता, धर्म से कहीं अधिक उच्च स्थान पर पहुँच जाती थी। कुर्रतुल 'अवध शासन' में हिन्दू-मुस्लिम मिलाप का वर्णन इस प्रकार करती हैं.... ''मुहर्रम में बलवे नहीं होते, न मस्जिदों के सामने बजा बजाया जाता है। हिन्दू ताजियादारी करते हैं और मुसलमान दीवाली मनाते हैं। कैसा उल्टा ज़माना है। नवाब व बेगम हर

साल होली मनाने फ़ैजाबाद से अपने बेटे के पास लखनऊ आती हैं। सारे राज्य में अनगिनत हिन्दू राजाओं ने मस्जिदें और इमामबाड़े बनवा रखे हैं।'[7]

यही मेल-मिलाप अब्दुल सत्तार के नाविल 'शब गजीदा' में भी मिलता है। भारतीय संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अंग संगीत एवं नृत्य को इस्मत चुग़ताई के 'टेढ़ी लकीर' और क़ुर्रतुल के 'आग का दरिया' उपन्यासों में अंकित किया गया है।

हिन्दू देवी-देवता, रामाकृष्ण अवतार, असुर, प्राकृतिक उपकरण (सृष्टि-प्रलय, भूकंप-पर्वत, नदी-जल, धूमकेतु-आकाशगंगा, वृक्ष) , कर्मकाण्ड (पूजा अनुष्ठान), पशु-पक्षी तथा लोक विश्वास आदि भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। उर्दू उपन्यासकारों ने इन सभी तत्त्वों का विस्तृत रूप से चित्रण किया है। इन उपन्यासकारों ने भारतीय देवी-देवताओं को कहीं सीधे-सीधे अपने उपन्यासों का नायक बनाया है तो कहीं इनका मिथक के रूप में प्रयोग किया है।

क़ुर्रतुल ऐन हैदर की भारतीय मिथकशास्त्र में गहरी पौठ है। उनके प्राय: सभी उपन्यासों में भारतीय मिथकों का कलात्मक प्रयोग हुआ है। उनका उपन्यास 'आग का दरिया' तो इस बात के लिए मशहूर है ही। 'एक लड़की की जिन्दगी' (सीता हरण) राम और बुद्ध के जीवन से संबंधित प्रसंग और सूत्र अनेकाश: बिखरे पड़े हैं। उपेक्षित सीता (आधुनिक) की स्थिति यशोधरा की भाँति ही है। यहाँ सीता और जमील के बेटे का नाम भी राहुल है। इस उपन्यास में लेखिका ने यशोधरा और बुद्ध के मिथक से, आधुनिक सीता की तुलना कर, उसकी (आधुनिक सीता) नियती और पीड़ा को दर्शाया है। लेखिका के कहने का तात्पर्य है कि यशोधरा की अपेक्षा, आधुनिक सीता का जीवन अधिक दुख भरा है, वहां राहुल तो है जो यशोधरा के जीने का सहारा है। यहाँ सीता जीवन भर अपने बेटे राहुल के लिए तड़पती रहती है। सीता के इसी हृदयगत उद्‌गारों को दर्शाता एक मार्मिक उद्धरण प्रस्तुत है.... ''इरफान, मुझे मेरा 'राहुल' चाहिए। अगर आपको मुझसे ज़रा-सी भी हमदर्दी है तो ज़मील से मेरा बच्चा वापस दिलवा दीजिए।'[8]

इसी तरह 'रामायण' की सीता आधुनिक सीता की अपेक्षा अधिक भाग्यशालिनी है। रामायण की सीता को स्थान-स्थान पर आश्रय, प्यार, मदद एवं सहानुभूति तो मिलती है लेकिन आधुनिक सीता तो निराश्रित, असहाय ही भटकती रहती है। भटकना ही उसकी नियति बन जाती है। आधुनिक सीता के दर्द को उजागर करता, उपन्यास से एक उदाहरण द्रष्टव्य है....

''आप सबकी इत्तला के लिए अर्ज़ है कि सीता आज की दुनिया के खौफनाक ज़गल में खो गई। उस सीता को आज की दुनिया का रावण उड़ाकर ले गया। हज़रत एंग्लो-अमेरिकन समाज का शिकार दुनिया जिसमें मासूमों को थर्ड डिग्री किया जाता है तो उन्हें कोई हनुमान बचाने नहीं आता।'[9]

इसके अतिरिक्त नमक (इकबाल मज़ीद), पानी (गज़नफर), फरात (हुसैनुल हक़) गोदावरी (फहमीदा रियाज), बस्ती (इंतिज़ार हुसैन), उदास नस्ले (अब्दुल्ला हुसैन) आदि उपन्यासों में भी भारतीय मिथकों का व्यापक रूप से चित्रण किया गया है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उर्दू उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के विभिन्न

आयामों का अंकन सफलतापूर्वक हुआ है लेकिन कुर्रतुल ऐन हैदर का "आग का दरिया" उपन्यास तो भारतीय संस्कृति का दर्पण कहा जा सकता है। इससे पता चलता है कि उर्दू उपन्यासकारों (भारतीय तथा पाकिस्तानी) में भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा ज्ञान, प्रेम एवं रूचि है।

सन्दर्भ :

1. रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 272
2. एम.पी. श्रीवास्तव : प्राचीन भारतीय संस्कृति, पृ. 6
3. कुर्रतुल ऐन हैदर : आग का दरिया (हिन्दी अनुवाद), पृ. 9
4. वही : वही, पृ. 9
5. काज़ी अब्दुल सत्तार : पहला और आखिरी ख़त (उर्दू), पृ. 171
6. इलियास अहमद गद्दी : फायर एरिया (हिन्दी अनुवाद), पृ. 68
7. कुर्रतुल ऐन हैदर : आग का दरिया, पृ. 138
8. कुर्रतुल ऐन हैदर : एक लड़की की जिन्दगी (तीन उपन्यास) हिन्दी अनुवाद, पृ. 204
9. वही : वही, पृ. 204

❖❖